11/05/2020 ~~B.A. III~~ पेपर → 10 एम एड

B.A. - III भारतीय काव्यशास्त्र II-Sem

काव्य का स्वरूप (लक्षण)

भारतीय काव्यशास्त्र में 'काव्य' शब्द का प्रयोग अत्यन्त व्यापक अर्थ में किया गया है। संस्कृत वाङ्मय में काव्य तथा साहित्य एक दूसरे के पर्यायवाची माने जाते हैं। भारतीय नाट्य विवेचन में भरतमुनि कृत 'नाट्यशास्त्र' काव्यशास्त्र का प्रारम्भिक ग्रन्थ है। नाटक और कविता दोनों ही काव्य के रूप माने जाते हैं। दृश्यकाव्य तथा श्रव्यकाव्य नामक भेदों में विविध काव्यरूप वर्गीकृत किये गये हैं

काव्य के प्रधानतया दो भेद किये जाते हैं —

(1) दृश्य काव्य (2) श्रव्य काव्य।

दृश्य काव्य के अन्तर्गत नाटक तथा समस्त नाट्य विधाएँ आती हैं। श्रव्यकाव्य के अन्तर्गत गद्य तथा पद्य दो उपवर्ग किये जाते हैं। गद्य काव्य के अन्तर्गत आख्यायिका अर्थात् उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि गद्य साहित्य की समस्त विधाएँ सम्मिलित होती हैं।

भारतीय आचार्यों ने काव्य के स्वरूप पर विस्तार से चिन्तन किया है। इन आचार्यों द्वारा समय-समय पर प्रस्तुत काव्य की कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं —

(1.) भामह → 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यं गद्यं पद्यं च तद्विधा' अर्थात् शब्द और अर्थ साहित्य काव्य है जो गद्य एवं पद्य के भेद से दो प्रकार का होता है।

(2) वामन → 'काव्यशब्दोऽयं गुणालङ्कार सहितयोः शब्दार्थयोर्वर्तते' अर्थात् गुण एवं अलंकार से संयुक्त शब्दार्थ काव्य संज्ञा का वाचक है।

(3) रुद्रट → 'शब्दार्थौ काव्यम्' अर्थात् शब्द और अर्थ का संयोग काव्य है।

(4) आनन्दवर्धन → 'शब्दार्थ शरीरं तावत्काव्यम्' अर्थात् शब्द और अर्थ जिसके शरीर हैं वही काव्य है।

(5) मम्मट → 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' अर्थात् दोष रहित, गुण सहित तथा कभी-कभी अलंकाररहित शब्दार्थ काव्य है।

(6) विश्वनाथ → 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

(7) पण्डितराज जगन्नाथ → 'रमणीयार्थ: प्रतिपादक: शब्द: काव्यम्' अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है

भारतीय काव्यशास्त्र के प्राचीन आचार्यों ने शब्द को काव्य बतलाया है। रमणीय अर्थ का प्रतिपादक शब्द ही काव्य है या रसात्मक वाक्य ही काव्य है या अभीष्ट अर्थ का व्यंजक पद-समूह ही काव्य है, इन तीनों कथनों में अर्थतत्त्व को भी यथेष्ट महत्त्व दिया गया है।

भारतीय आचार्यों ने इसी दृष्टि से काव्य में शब्द और अर्थ का समभाव आवश्यक बतलाया है।